हिन्दीभाशा की दषा व दिषा

MRS. PINKI DALAL
Prof. Hindi Vaish Arya Kanya Mahavidyalaya Bahadurgarh
Distt. Jhajjar (Haryana)

14 सितम्बर 1949 को भारतीय सविधान में हिन्दी को गरिमामय पद प्राप्तहुआ। हिन्दी सवैधानिक रूप्से भारत की प्रथम राज भाशा है, भारत की सबसे अधिक बोली व समझी जानेवाली भाशा है।इस के अतिरिक्त इस में अनेक खूबियाँहै।

- यह सबसे सरल भाशा है
- यह सबसे लचीली भाशा है।
- इस के अधिकतर नियम अपवादविहीन है।
- यह सबसे अधिकव्यवस्थित भाशा है।
- हिन्दीभाशा की लिपिदेवनागरीअत्यन्तवैज्ञानिकहै।
- हिन्दीको षब्दसम्पदासंस्कृतसेविरासतमेंमिलीहै। यह दुसरीभाशाओंसे षब्दलेनेमेंसंकोचनहींकरती।
- हिन्दीआमजनतासेजुडीभाशाहै
- यह विष्वभाशाबननेकीपूर्ण अधिकारिणी है।
- हिन्दीकासाहित्य समृद्ध है।
- भारत की राजभाशा व सम्पर्कभाशाहै।

हिन्दीकासाहित्य विष्वमेंसबसे समृद्ध साहित्य है।हिन्दीभाशाकासम्बन्ध हमारीसंस्कृति, सभ्यताऔरसाहित्य सेहै।इससन्दर्भसे यह भाशामहत्वपूर्णहै।रोजगारउपलब्ध करानेमेंभी यह कारगरसाबितहोरहीक्योंकि बढ़तीतकनीकीप्रगति के मद्देनजर रखतेहुए हिन्दी ने भी खुदकोजमाने के अनुकूलढ़ाललियाहै।

भारत एक विषालदेषहै,विविधताओंकादेषहै, बहु–धर्मावलम्बी, बहु–जातियाँ,बहुभाशाओंवालादेषहै, फिरभी एकता के सूत्र मेंबंधाहुआहै।भाशाओं कीविविधतओंको देखेतो यहाँ,पर 800 सेभीज्यादाभाशाऔरबोलियांबोलीजातीहै।विविध भाशा के विशय परकहाभीजाताहै ''कोस–कोसपरबदलेपानीऔरढ़ाईकोसपरबदले वाणी''।

अगरहमहिन्दीमेंबोलेतोजनजनको समझा सकतेहैऔरजनमानसहमें समझसकताहै।हिन्दीमेंहीवह क्षमताहैजोहमेंउन्नति के पथपरलेजासकतीहै।हमारेहिन्दीसाहित्यकारोंविषेशकरकवियों ने भीइसीवृतिपर बल दियाहैभारतेन्दुजी की पक्तियाँ,

''निजभाशाउन्नतिअहे, सबउन्नतिकौमूल

बिननिजभाशाज्ञान के मिटे न हिय कौ षूल।'' [1]

हमारीमातृभाशाहमारीअभिव्यक्तिकासर्वोतममाध्यम हीनहींबल्किहमारीपहचानहै, हमारीसंस्कृति की वाहकहैं।लोकमान्य बालगंगाधरतिलक ने स्पश्टकहाथा–'' हिन्दीराश्ट्रभाशाबन सकतीहै।मेरी समझमेंहिन्दीभारतकीसामान्य भाशाहोनीचाहिए, यानीसमस्तहिदुस्तानमेंबोलीजानेवालीभाशाहोनीचाहिए।'' [2]

सविधानमेंव्यवस्था की गईथीकि 15 वर्शोंमेंहमेंसरकारीकामकाज के लिए अँग्रेजीकी आवष्यकतानहींपड़ेगी, ऐसासोचागयाथा, ऐसीपरिकल्पनाकीगईथी।लेकिन यह विडम्बनाहै।वास्तविकताहमसब के

सामनेहै ।आजभीहिन्दीप्रथमभाशा न होकरअंग्रेजीकीअनुचरीबनीहुईहै ।कहनेकोहिन्दीराजभाशाहै । सभीसवैधानिकऔरवैज्ञानिकप्रावधानों के बावजूदभीअंग्रेजीकाबोलबाला कम नहींहुआ।

अंग्रेजीकाइतनाअधिकबोलबालाहमें यह सोचनेपरमजबूरकरताहैकिक्याहिन्दीमेंकामकरने की क्षमतानहींहै ।हिन्दीजोहिन्दुस्तान के जनजनकीभाशाहैइसकोलिखनासरकारीकर्मचारियों व अधिकारियों के वषमेंनहींहै, हम यह मानहीनहींसकतेकिहिन्दीमें वो बातनहींहै ।क्याहिन्दीइतनीविपन्नहै, क्याइसमेंकार्यकोकरने की षब्द षक्तिनहींहै। यह सचनहींहैं, हिन्दी एक समृद्ध भाशाहैसाहित्य में, संस्कृतिमें ।हिन्दीप्राचीनतमभाशासंस्कृतसेजन्मीहै ।हिन्दीको षब्द षक्तिसंस्कृतसेहिप्राप्तहुईहै ।हम कह सकतेहैंकिहिन्दीही वो भाशाहैजोसहीमायनोमेंराश्ट्रभाशाकहलानेकीहकदारीहै। बस कमींहैतोहमारीसोच की ,हमारीमानसिकताकी ।हमारीसोचइतनीछोटीहोचुकीहैकिअंग्रेजी पढ़ने लिखनेवालोकोही पढ़ा लिखामानाजाताहैऔरहिन्दीमेंकामकरनेवालोकोअनपढ़ मानाजाताहै।

कितनीबड़ीहैरानीहै।

कहने के लिए हिन्दीइसदेष की महारानीहै।

एकताऔर अखण्डता की कड़ीहै वो, राजभाशाहैदेष की सबसेबड़ीहै वो

हेईष्वर। ऐसाकोईमकसददिला दे, सहीमायनेमेंहिन्दीकोराजभाशाबनादे।

क्योंकिइसी के छविमानप्रकाषसे,हमहैं, आपहैं,पूराहिन्दुस्तानहै।

जिसकेकलकलस्वरमें, गूजताओम् कानामहै।

जो षीतलहै,निर्मलहै ।जिसकाहर षब्दभगवानकानामहै,

जय हिन्दी , जय भारत।[3]

अगरहमनजरउठाकर देखतेहैतोपूरेविष्वमें एक भीराश्ट्रनहींहैजहाविदेषीभाशामें षासनकियाजाताहो यह सिर्फभारतमेंहोसकताहै ।हजारोवर्शो की सांस्कृतिकपरम्परावालाभारतदेषआजविदेषीभाशाकागुलामहै ।अगरइंग्लैंडकाकोईराजनेताहिन्दीमेंभाशण दे तोस्थितिक्याहोगीहमसोचसकतेहै ।लेकिनहिन्दीभाशीभारतमेंतो यह आमबातहैहमारादेषस्वाधीनदेषतभी बन पाएगाजबहमेंअंग्रेजी के तलुए चाटनेवालेराजनेताओंसेमुक्तिमिलेगी ।इससेपहलेहमअंग्रेजीसेमुक्तिनहींपासकते।

आपऔरहमसब वो जादुगरहैजोहिन्दीकोनईदिषा दे सकतेहै ।इसकीदिषाबदलसकतेहै ।हमसभीदेषभक्तहै, आषाऔरउत्साह के साथकामकरेतोसबकुछसम्भवहै ।प्रयासतोकरके देखो

कौनकहताहैआसमानमेंसुराख नहींहोसकता

तबियतसेकोईपत्थरतोउछालो यारों

अतः हमसबकाकर्तव्य हैकिराश्ट्रभाशाहिन्दी के प्रचारप्रसार के लिए हरसम्भवप्रयासकरेसाथहीसाथ याद रखेकिहिन्दी के प्रयोगसेहीनतानहींबल्किगौरवहै।

''भाशा के संसारकीसरताजहैहिन्दी

अभिव्यक्तिकासुमधुर एक साजहैहिन्दी

राश्ट्रीय गौरव व संस्कृति की प्रतीकहीनहीं

भारतकीआत्मा की आवाजहैहिन्दी।'' [4]

हिन्दीअपनीसरलता, वात्सल्य औरअपनेअन्दरविभिन्नभाशाओंऔरबोलियोंकोआत्मसातकरने के गुण के कारण, अपनीजननीकोभीबहुतपीछेछोड, भारतवर्श के बाहरभीअपनेपंख पसारचुकीहै।

अतः हमेंपाष्चात्य संस्कृति व अंग्रेजीभाशा के मोहजालमेंनफँसकर , अपनीराश्ट्रभाशा की उपेक्षा न करतेहुए उसकोप्रतिश्ठितकरनाहीहमारा धर्महै

संदर्भ–

1ण आठअर्वाचीनकविसम्पादकलालचन्दगुप्त 'मंगल' एवंमदनगुलाटीपृश्ठ– 3
2ण डॉनरेषमिश्र–भाशाविज्ञानऔरमानकहिन्दी, पृश्ठ–149
3ण डॉसुदर्षनराठी–राजभाशाहिन्दी, षोध पत्र
4ण हिन्दीदषाऔरदिषा–श्रीमतीसरिता

श्रीमतीपिंकी

प्राध्यापिकाहिन्दीविभाग

वैष्य आर्यकन्यामहाविद्यालय

बहादुरगढ़, हरियाणा